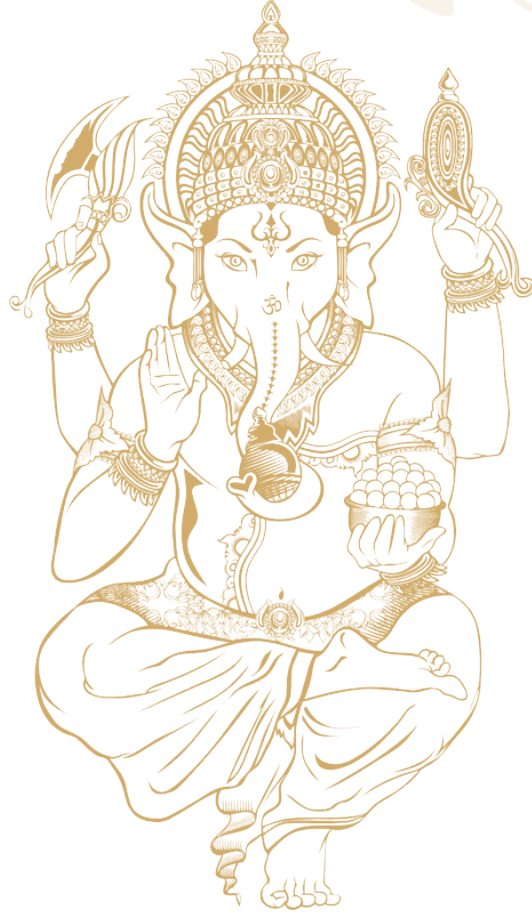




Priyanka yaduwanshi

30 Mar 1998

11:30 PM

Itarsi

Model: Web-MyKundli

Order No: 120354601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 30/03/1998
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 23:30:00 घंटे
इष्ट _____: 43:10:01 घटी
स्थान _____: Itarsi
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 22:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:48:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:18:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 23:11:12 घंटे
वेलान्तर _____: -00:04:34 घंटे
साम्पातिक काल _____: 11:42:53 घंटे
सूर्योदय _____: 06:13:59 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:33:08 घंटे
दिनमान _____: 12:19:09 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 16:00:01 मीन
लग्न के अंश _____: 22:56:21 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृश्चिक - मंगल
राशि-स्वामी _____: मेष - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: भरणी - 3
नक्षत्र स्वामी _____: शुक्र
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: वणिज
गण _____: मनुष्य
योनि _____: गज
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: ले-लेखा
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मेष

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajiJyotishkendra@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1920	चैत्र	9
पंजाबी	संवत : 2054	चैत्र	17
बंगाली	सन् : 1404	चैत्र	16
तमिल	संवत : 2054	पंगुनी	16
केरल	कोल्लम : 1173	मीनम	16
नेपाली	संवत : 2054	चैत्र	17
चैत्रादि	संवत : 2055	चैत्र	शुक्ल 3
कार्तिकादि	संवत : 2055	चैत्र	शुक्ल 3

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 3
तिथि समाप्ति काल _____ : 21:48:52
जन्म तिथि _____ : 4
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : अश्विनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 08:00:05 घंटे
जन्म योग _____ : भरणी
सूर्योदय कालीन योग _____ : वैधृति
योग समाप्ति काल _____ : 09:57:30 घंटे
जन्म योग _____ : विष्कुम्भ
सूर्योदय कालीन करण _____ : तैत्ति
करण समाप्ति काल _____ : 11:28:31 घंटे
जन्म करण _____ : वणिज
भयात _____ : 38:44:51
भभोग _____ : 53:44:55
भोग्य दशा काल _____ : शुक्र 5 वर्ष 6 मा 15 दि

घात चक्र

मास _____ : कार्तिक
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : रविवार
नक्षत्र _____ : मघा
योग _____ : विष्कुम्भ
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : मेष
सूर्य _____ : कर्क
चन्द्र _____ : मेष
मंगल _____ : सिंह
बुध _____ : वृष
गुरु _____ : कन्या
शुक्र _____ : तुला
शनि _____ : मिथुन
राहु _____ : वृश्चिक

Shri Dadaji Jyotish kendra

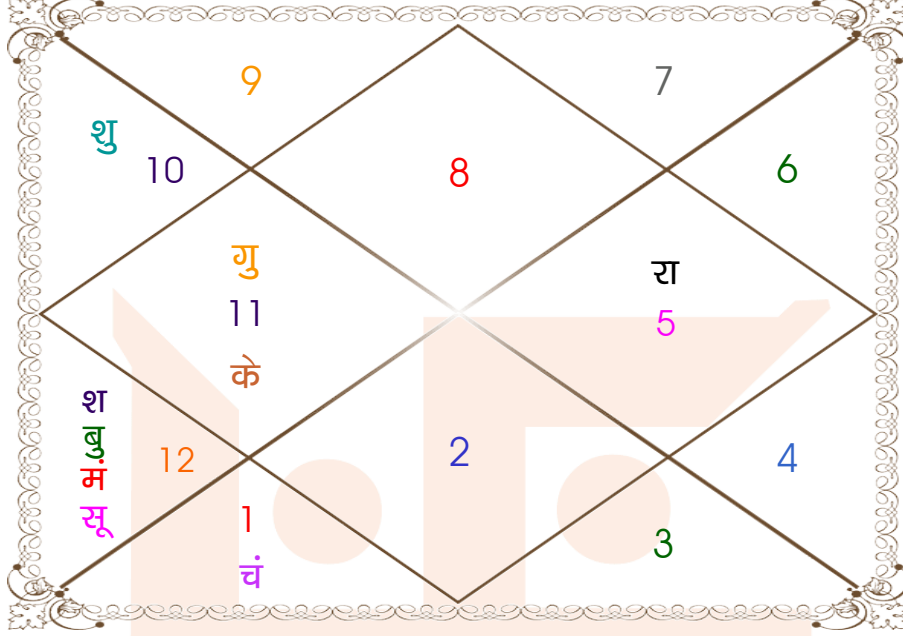
Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

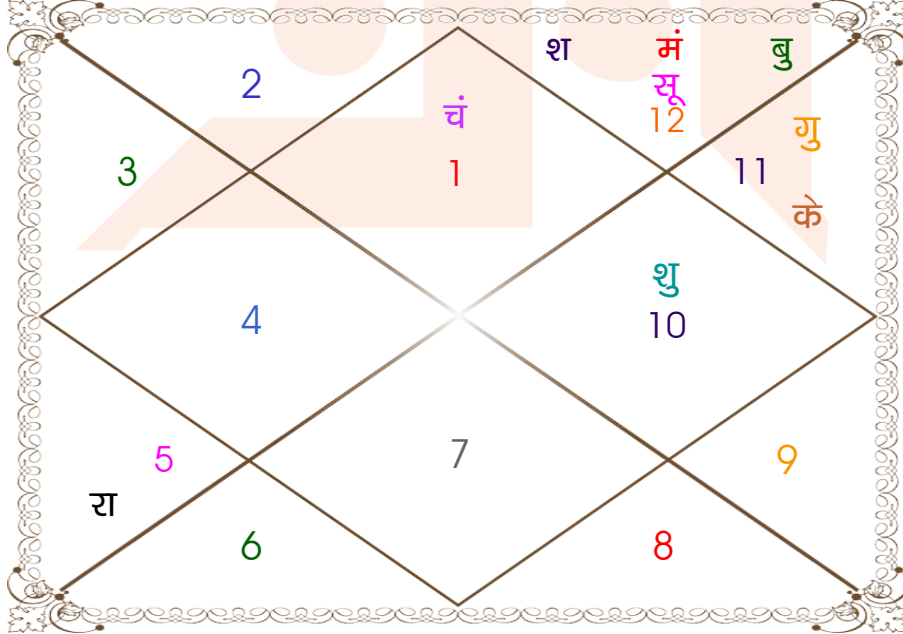
dadajijyotishkendra@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

बु सू म श	चं		
के गु			
शु			रा
	ल		

लग्न कुंडली

	चं	बु सू म श	श
		के गु	
रा		शु	
	ल		

विंशोत्तरी
शुक्र 5वर्ष 6मा 15दि
शुक्र

30/03/1998

15/10/2103

शुक्र	14/10/2003
सूर्य	14/10/2009
चन्द्र	14/10/2019
मंगल	14/10/2026
राहु	14/10/2044
गुरु	14/10/2060
शनि	14/10/2079
बुध	14/10/2096
केतु	15/10/2103

योगिनी
भद्रिका 1वर्ष 4मा 18दि
धान्या

18/08/2023

18/08/2026

धान्या	18/11/2023
भ्रामरी	19/03/2024
भद्रिका	18/08/2024
उल्का	16/02/2025
सिद्धा	17/09/2025
संकटा	19/05/2026
मंगला	18/06/2026
पिंगला	18/08/2026

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

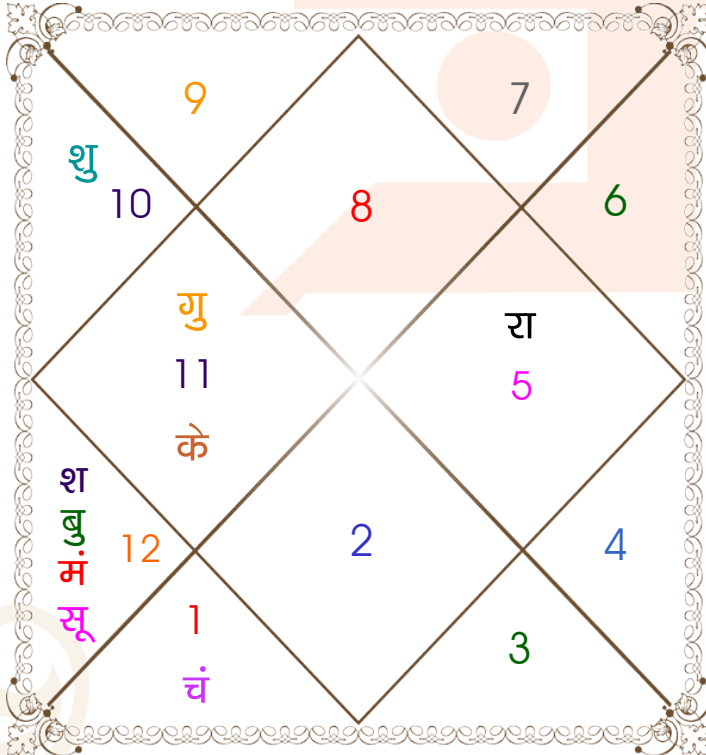
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	22:56:21	319:57:52	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	चंद्र	---
सूर्य			मीन	16:00:01	00:59:18	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	गुरु	मित्र राशि
चंद्र			मेष	22:58:21	14:49:13	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	सम राशि
मंगल		अ	मीन	26:09:53	00:45:29	रेवती	3	27	गुरु	बुध	गुरु	मित्र राशि
बुध		व	मीन	27:08:55	00:20:34	रेवती	4	27	गुरु	बुध	गुरु	नीच राशि
गुरु			कुंभ	19:04:16	00:13:40	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	चंद्र	सम राशि
शुक्र			मक	29:32:19	01:00:18	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	मित्र राशि
शनि		अ	मीन	27:46:59	00:07:30	रेवती	4	27	गुरु	बुध	गुरु	सम राशि
राहु		व	सिंह	16:24:33	00:03:49	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	शत्रु राशि
केतु		व	कुंभ	16:24:33	00:03:49	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष			मक	17:59:31	00:02:14	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	---
नेप			मक	08:00:15	00:01:07	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
प्लूटो		व	वृश्चि	14:07:33	00:00:39	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	---
दशम भाव			कन्या	01:30:27	--	उ०फाल्गुनी	--	12	बुध	सूर्य	गुरु	--

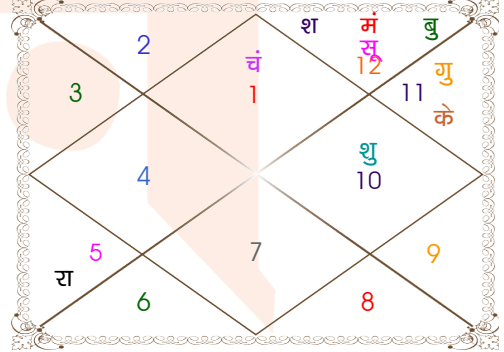
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:49:50

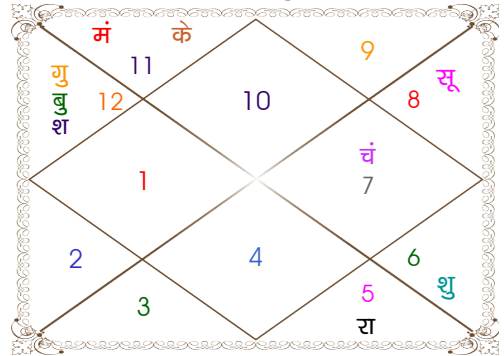
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajiJyotishkendra@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृश्चिक 09:22:02	वृश्चिक 22:56:21
2	धनु 09:22:02	धनु 25:47:43
3	मकर 12:13:24	मकर 28:39:05
4	कुम्भ 15:04:46	मीन 01:30:27
5	मीन 15:04:46	मीन 28:39:05
6	मेष 12:13:24	मेष 25:47:43
7	वृष 09:22:02	वृष 22:56:21
8	मिथुन 09:22:02	मिथुन 25:47:43
9	कर्क 12:13:24	कर्क 28:39:05
10	सिंह 15:04:46	कन्या 01:30:27
11	कन्या 15:04:46	कन्या 28:39:05
12	तुला 12:13:24	तुला 25:47:43

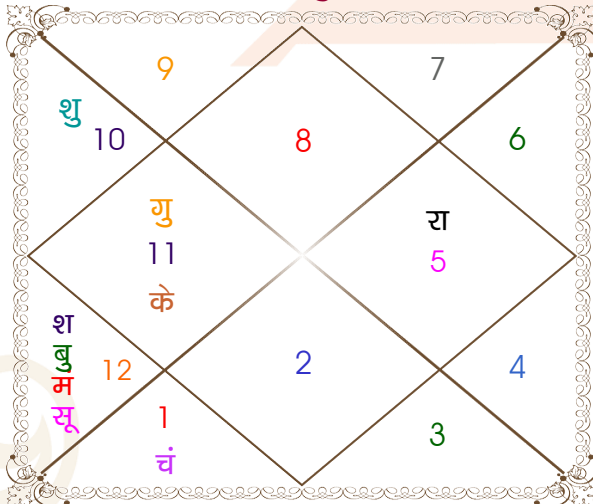
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	22:56:21
2	धनु	23:51:05
3	मकर	27:27:22
4	मीन	01:30:27
5	मेष	02:22:16
6	मेष	28:57:04
7	वृष	22:56:21
8	मिथुन	23:51:05
9	कर्क	27:27:22
10	कन्या	01:30:27
11	तुला	02:22:16
12	तुला	28:57:04

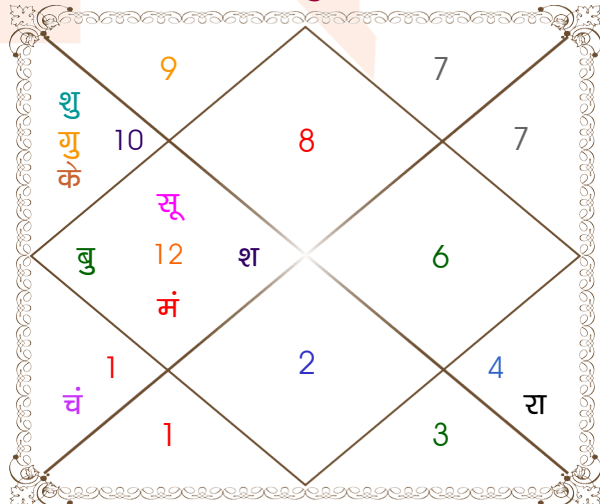
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उभाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 5 वर्ष 6 मास 15 दिन

शुक्र 20 वर्ष 30/03/1998 14/10/2003	सूर्य 6 वर्ष 14/10/2003 14/10/2009	चंद्र 10 वर्ष 14/10/2009 14/10/2019	मंगल 7 वर्ष 14/10/2019 14/10/2026	राहु 18 वर्ष 14/10/2026 14/10/2044
00/00/0000	सूर्य 01/02/2004	चंद्र 14/08/2010	मंगल 12/03/2020	राहु 26/06/2029
00/00/0000	चंद्र 02/08/2004	मंगल 15/03/2011	राहु 30/03/2021	गुरु 20/11/2031
00/00/0000	मंगल 07/12/2004	राहु 13/09/2012	गुरु 06/03/2022	शनि 26/09/2034
00/00/0000	राहु 01/11/2005	गुरु 13/01/2014	शनि 15/04/2023	बुध 14/04/2037
00/00/0000	गुरु 20/08/2006	शनि 15/08/2015	बुध 11/04/2024	केतु 03/05/2038
30/03/1998	शनि 02/08/2007	बुध 13/01/2017	केतु 07/09/2024	शुक्र 03/05/2041
शनि 14/10/1999	बुध 08/06/2008	केतु 14/08/2017	शुक्र 07/11/2025	सूर्य 27/03/2042
बुध 14/08/2002	केतु 14/10/2008	शुक्र 15/04/2019	सूर्य 15/03/2026	चंद्र 26/09/2043
केतु 14/10/2003	शुक्र 14/10/2009	सूर्य 14/10/2019	चंद्र 14/10/2026	मंगल 14/10/2044
गुरु 16 वर्ष 14/10/2044 14/10/2060	शनि 19 वर्ष 14/10/2060 14/10/2079	बुध 17 वर्ष 14/10/2079 14/10/2096	केतु 7 वर्ष 14/10/2096 15/10/2103	शुक्र 20 वर्ष 15/10/2103 00/00/0000
गुरु 02/12/2046	शनि 17/10/2063	बुध 12/03/2082	केतु 12/03/2097	शुक्र 14/02/2107
शनि 14/06/2049	बुध 27/06/2066	केतु 09/03/2083	शुक्र 12/05/2098	सूर्य 14/02/2108
बुध 20/09/2051	केतु 05/08/2067	शुक्र 07/01/2086	सूर्य 17/09/2098	चंद्र 15/10/2109
केतु 26/08/2052	शुक्र 05/10/2070	सूर्य 14/11/2086	चंद्र 18/04/2099	मंगल 15/12/2110
शुक्र 27/04/2055	सूर्य 17/09/2071	चंद्र 14/04/2088	मंगल 14/09/2099	राहु 15/12/2113
सूर्य 13/02/2056	चंद्र 17/04/2073	मंगल 11/04/2089	राहु 02/10/2100	गुरु 15/08/2116
चंद्र 14/06/2057	मंगल 27/05/2074	राहु 30/10/2091	गुरु 08/09/2101	शनि 31/03/2118
मंगल 21/05/2058	राहु 02/04/2077	गुरु 04/02/2094	शनि 18/10/2102	00/00/0000
राहु 14/10/2060	गुरु 14/10/2079	शनि 14/10/2096	बुध 15/10/2103	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 5 वर्ष 6 मा 30 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - सूर्य 07/11/2025 15/03/2026	मंगल - चंद्र 15/03/2026 14/10/2026	राहु - राहु 14/10/2026 26/06/2029	राहु - गुरु 26/06/2029 20/11/2031	राहु - शनि 20/11/2031 26/09/2034
सूर्य 14/11/2025 चंद्र 24/11/2025 मंगल 02/12/2025 राहु 21/12/2025 गुरु 07/01/2026 शनि 27/01/2026 बुध 14/02/2026 केतु 22/02/2026 शुक्र 15/03/2026	चंद्र 02/04/2026 मंगल 14/04/2026 राहु 16/05/2026 गुरु 14/06/2026 शनि 17/07/2026 बुध 17/08/2026 केतु 29/08/2026 शुक्र 04/10/2026 सूर्य 14/10/2026	राहु 11/03/2027 गुरु 21/07/2027 शनि 24/12/2027 बुध 11/05/2028 केतु 08/07/2028 शुक्र 19/12/2028 सूर्य 07/02/2029 चंद्र 30/04/2029 मंगल 26/06/2029	गुरु 21/10/2029 शनि 09/03/2030 बुध 11/07/2030 केतु 31/08/2030 शुक्र 24/01/2031 सूर्य 09/03/2031 चंद्र 21/05/2031 मंगल 11/07/2031 राहु 20/11/2031	शनि 03/05/2032 बुध 27/09/2032 केतु 27/11/2032 शुक्र 19/05/2033 सूर्य 10/07/2033 चंद्र 05/10/2033 मंगल 05/12/2033 राहु 10/05/2034 गुरु 26/09/2034
राहु - बुध 26/09/2034 14/04/2037	राहु - केतु 14/04/2037 03/05/2038	राहु - शुक्र 03/05/2038 03/05/2041	राहु - सूर्य 03/05/2041 27/03/2042	राहु - चंद्र 27/03/2042 26/09/2043
बुध 05/02/2035 केतु 31/03/2035 शुक्र 02/09/2035 सूर्य 19/10/2035 चंद्र 05/01/2036 मंगल 28/02/2036 राहु 17/07/2036 गुरु 18/11/2036 शनि 14/04/2037	केतु 07/05/2037 शुक्र 10/07/2037 सूर्य 29/07/2037 चंद्र 30/08/2037 मंगल 21/09/2037 राहु 18/11/2037 गुरु 08/01/2038 शनि 09/03/2038 बुध 03/05/2038	शुक्र 01/11/2038 सूर्य 26/12/2038 चंद्र 28/03/2039 मंगल 30/05/2039 राहु 11/11/2039 गुरु 05/04/2040 शनि 25/09/2040 बुध 28/02/2041 केतु 03/05/2041	सूर्य 19/05/2041 चंद्र 15/06/2041 मंगल 05/07/2041 राहु 23/08/2041 गुरु 06/10/2041 शनि 27/11/2041 बुध 12/01/2042 केतु 31/01/2042 शुक्र 27/03/2042	चंद्र 12/05/2042 मंगल 13/06/2042 राहु 03/09/2042 गुरु 15/11/2042 शनि 10/02/2043 बुध 28/04/2043 केतु 30/05/2043 शुक्र 30/08/2043 सूर्य 26/09/2043
राहु - मंगल 26/09/2043 14/10/2044	गुरु - गुरु 14/10/2044 02/12/2046	गुरु - शनि 02/12/2046 14/06/2049	गुरु - बुध 14/06/2049 20/09/2051	गुरु - केतु 20/09/2051 26/08/2052
मंगल 19/10/2043 राहु 15/12/2043 गुरु 04/02/2044 शनि 05/04/2044 बुध 29/05/2044 केतु 21/06/2044 शुक्र 24/08/2044 सूर्य 12/09/2044 चंद्र 14/10/2044	गुरु 26/01/2045 शनि 29/05/2045 बुध 16/09/2045 केतु 01/11/2045 शुक्र 11/03/2046 सूर्य 19/04/2046 चंद्र 23/06/2046 मंगल 07/08/2046 राहु 02/12/2046	शनि 27/04/2047 बुध 05/09/2047 केतु 29/10/2047 शुक्र 01/04/2048 सूर्य 17/05/2048 चंद्र 02/08/2048 मंगल 25/09/2048 राहु 11/02/2049 गुरु 14/06/2049	बुध 09/10/2049 केतु 27/11/2049 शुक्र 14/04/2050 सूर्य 25/05/2050 चंद्र 02/08/2050 मंगल 19/09/2050 राहु 22/01/2051 गुरु 12/05/2051 शनि 20/09/2051	केतु 10/10/2051 शुक्र 06/12/2051 सूर्य 23/12/2051 चंद्र 20/01/2052 मंगल 09/02/2052 राहु 31/03/2052 गुरु 16/05/2052 शनि 09/07/2052 बुध 26/08/2052

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	6
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 6
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

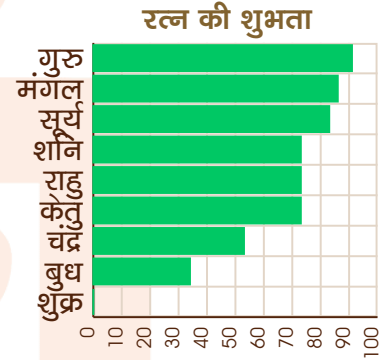
dadajijyotishkendra@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	91%	सुख, धन, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	86%	सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	83%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	73%	सन्तति सुख, पराक्रम, सुख
गोमेद	राहु	73%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	73%	सुख, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	53%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
पन्ना	बुध	34%	सन्तति कष्ट, दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	0%	पराक्रम हानि, दाम्पत्य कष्ट, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	14/10/2003	70%	31%	86%	47%	91%	22%	80%	80%	80%
सूर्य	14/10/2009	95%	59%	92%	34%	97%	0%	61%	61%	61%
चंद्र	14/10/2019	89%	66%	86%	47%	91%	0%	73%	61%	61%
मंगल	14/10/2026	89%	59%	98%	9%	97%	0%	73%	61%	80%
राहु	14/10/2044	70%	31%	73%	34%	91%	9%	80%	86%	61%
गुरु	14/10/2060	89%	59%	92%	9%	100%	0%	73%	73%	73%
शनि	14/10/2079	70%	31%	73%	47%	91%	9%	86%	80%	61%
बुध	14/10/2096	89%	31%	86%	55%	91%	9%	73%	73%	73%
केतु	15/10/2103	70%	31%	92%	34%	91%	9%	61%	61%	86%

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	30/03/1998-17/04/1998	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
सम
शुभ
सम
अशुभ

क्षेत्र

सन्तति
शत्रु से कष्ट
दम्पति
बदनामी
बुरा स्वास्थ्य

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्मकाल में मंगल की स्थिति चन्द्रकुंडली में द्वादश भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि चन्द्र से मांगलिक होने का दोष अधिक प्रबल नहीं होता अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति किंचित व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आप समय समय पर व्यय करती रहेंगी जिससे आपको अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अल्प रहेगा। सामान्य रूप से धनार्जन होता रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य आपका मध्यम रहेगा। मानसिक परेशानी की अनुभूति आपको समय समय पर होती रहेगी। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी उत्पन्न होंगे। लेकिन उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगी। आपके पति का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब हो सकता है परन्तु इस कार्य में सफलता आपको अवश्य प्राप्त होगी। साथ ही विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध भी उत्पन्न हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन परस्पर सामंजस्य के कारण अनुकूल रहेगा तथा इसका उचित उपभोग करने में आप समर्थ रहेंगी।

चन्द्रकुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होगी परन्तु प्रचुर मात्रा में धनार्जन होने के कारण इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों तथा समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में भी आप सफल होंगी। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से भाई बहनों का सुख मध्यम रहेगा परन्तु पराक्रम तथा आत्मबल में वृद्धि होगी जिससे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। षष्ठ

भावस्थ मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में आपको सफलता मिलेगी। यदा कदा पित्त या गर्मी द्वारा उत्पन्न रोगों से आपको परेशानी का सामना करना पड़ेगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन परस्पर सामंजस्य के कारण आप सुखी दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में समर्थ रहेंगी।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे परस्पर मांगलिक दोष का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु सदृश पाप ग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी। धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक आप अपने दाम्पत्य जीवन का उपभोग करेंगी तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्रदान करेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से पृथक रहता है। नाना-नानी, दादा-दादी का स्नेह आंशिक रूप में मिलता है। जातक को माता-पिता का विरह सहना पड़ता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक की सन्तान कभी-कभी अस्वस्थ हो जाती है और जातक को थोड़ा बहुत चिन्ता परेशानी घेर लेती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। नौकरी-व्यवसाय में व्यवधान उपस्थित होता है पर कालान्तर में वह स्वतः समाप्त हो जाता है। कभी जातक को पदच्युत होने का भय भी होता है और व्यापार व्यवसाय में परिश्रम करने के बाद भी विशेष रूप से जमता नहीं या आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है एवं जातक को आंशिक रूप में क्लेश भोगना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे सब षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर वे लोग अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं हो पाते। मित्रगण समय-समय पर धोखा दे जाते हैं। जिससे जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और सरकारी पदाधिकारी से अनबन रहती है तथा राज्यपक्ष से भी क्षति प्राप्त होती है। जातक की स्थिति कभी राजा तो कभी रंक जैसा जीवन व्यतीत होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में रोग व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। कभी चोट लगने का भय भी होता है। जातक को सुख शान्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है एवं उसमें प्रसिद्धि भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पंचम भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है ।
- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य, चन्द्र और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य पंचम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा किंचित शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करते रहेंगे। धनैश्वर्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपको वे वांछित आर्थिक सहयोग भी देते रहेंगे जिससे आप को कोई भी कष्ट न हो।

आप भी उनके प्रति पूर्ण आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आप के मध्य आपसी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनिक तनाव तथा कटुता उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप उनकी सुखसुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा आवश्यकतानुसार उन्हें आर्थिक या अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगी।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही आपको

जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आप मध्यम रूप से सुख प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु कभी कभी शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे। जीवन में वे आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपना योगदान प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता देंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी आप उनका वांछित सहयोग प्राप्त करेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंध भी प्रायः मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही सामान्य हो जाएगा। आप सुख दुःख में हमेशा उनका सहयोग करेंगी एवं अपनी ओर से कभी भी उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी। इसके अतिरिक्त अवसरानुकूल आप उन्हें आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी। इस प्रकार आप मध्यम रूप से एक दूसरे का सुख प्राप्त करेंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान् परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराक्रमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्यरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान्, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल
(14/10/2019 - 14/10/2026)

मंगल की महादशा 14/10/2019 को आरम्भ और 14/10/2026 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष होगी। इसके पहले आपकी चन्द्र की 10 वर्ष की महादशा चल रही थी। चन्द्र के अष्टम भाव का स्वामी होने के कारण आपको अचानक धन की प्राप्ति, अप्रत्याशित विकास, रहस्य-विज्ञान में रुचि, सट्टे से लाभ और विदेशी स्रोतों से धन का लाभ हुआ होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में दैनिक जीवन के प्रति आत्मविश्वास, साहस उत्साह की उत्पत्ति होगी। मौसमी बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप पित्तदोष, पाचन सम्बंधी गड़बड़ी, सरदर्द, ज्वर और कभी-कभी हृदयगति की गड़बड़ी से ग्रसित हो सकते हैं। किन्तु ये गम्भीर नहीं होंगे। आपका जीवन सामान्यतः ठीक रहेगा। महिलाओं को अपने स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना होगा।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आपको सट्टे तथा लाभदायक निवेश से लाभ होगा। कभी-कभी खासकर मंगल की महादशा में आपका नुकसान हो सकता है, सावधानी बरतें। फिर भी विदेशी स्रोतों से आपकी आय होती रहेगी। इस दशा में आपका धन-संचय होगा। जीविका के लिए सिविल तथा मेकैनिकल इंजीनियरिंग, सैन्य सेवा, दवाओं का कारोबार, दन्तचिकित्सक का कार्य, खेल-सामग्री, ताम्बे और खनिज आदि का कारोबार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का परिवर्तन होगा और वह लाभदायक होगा। आप अपने कार्यस्थल में जाने जायेंगे, और आपको मान्यता तथा सहयोगियों और उच्चाधिकारियों से सद्भाव की प्राप्ति होगी। व्यवसायियों-व्यापारियों के कार्य में भी परिवर्तन और घर परिवर्तन लाभदायक होगा। लक्ष्य की प्राप्ति के लिये आपको कुछ कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है। इस दशा के दौरान अप्रत्याशित प्रगति, अचानक धन की प्राप्ति और विदेशी स्रोतों से लाभ की सम्भावना है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। इस दशा में आपको यातायात से लाभ होगा। जमीन-जायदाद के मामले उभरेंगे। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको कुछ अप्रत्याशित धन का लाभ हो सकता है। शनि की अन्तर्दशा में आपकी कुछ छोटी और मंगल तथा सूर्य की अन्तर्दशा में लम्बी यात्राएँ हो सकती हैं। आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। तकनीकी शिक्षा, गणित, लेखा, इंजीनियरिंग, विज्ञान आदि का अध्ययन आपके लिए लाभदायक होगा। आपको परीक्षा में सफलता मिलेगी। शिक्षण-वृत्ति के मध्य कुछ लाभदायक परिवर्तन हो सकता है। आपका

नेतृत्व गुण सामने आएगा।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका संबंध उत्तम होगा। आपके बच्चे आपके सुख व लाभ के स्रोत हो सकते हैं। आपके जीवन साथी को हर प्रकार का लाभ, विरोधियों पर विजय और उनसे लाभ हो सकता है। आपके साझेदार के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम होगा। आपकी माता को लाभ और समृद्धि की प्राप्ति होगी और पिता की अचल सम्पत्ति, धन तथा यात्राओं में वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को शक्ति, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और वे प्रगति करेंगे। आपके बड़े भाई-बहनों के लिए यह दशा लाभदायक होगी। आपके व्यावसायिक साझेदारों में आपके अनेक मित्र होंगे और आपको उनसे लाभ मिलेगा। कुल मिलाकर यह दशा उत्तम है।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के कारण लाभ तथा सन्तान से सुख मिलेगा। आगे राहु की दशा कुछ समस्याएँ खड़ी कर सकती है। चतुर्थ तथा लग्न के स्वामी गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप धन तथा सुख आरम्भ की प्राप्ति हो सकती है। शनि की अन्तर्दशा के कारण छोटी यात्रा और कुछ मामूली परिवर्तन हो सकता है जबकि बुध के फलस्वरूप साझेदारी में लाभ और जीवन में उन्नति होगी। आगे आने वाली केतु की अन्तर्दशा के दौरान कुछ मानसिक या शारीरिक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ स्वास्थ्य समस्याएँ और लाभ हो सकता है जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण समृद्धि की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ परिवर्तन होगा।

**अंतर्दशा :- मंगल - शुक्र
(07/09/2024 - 07/11/2025)**

आपके लिए मंगल की महादशा 14/10/2019 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 07/09/2024 को प्रारंभ होकर 07/11/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आपकी लघु यात्राएं होंगी, बहुत से मित्र होंगे। मित्रों से लाभ होगा। धन में वृद्धि होगी, विवाहित जीवन सुखी रहेगा। सफलता आसानी से मिल जाएगी। कला, संगीत आदि में रुचि बढ़ेगी। जीवनसाथी, संतान और भाई-बहनों से सुख मिलेगा। पिता से संबंध मधुर रहेंगे। समाजसेवा और दानकर्म में रुचि लेंगे।

आपके जीवनसाथी की लंबी यात्रा हो सकती है, सरकार से सहयोग मिलेगा। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम होगा; शत्रुओं पर विजय होगी। माता सुख-सुविधा संपन्न होंगी। भाई-बहनों को उच्चपद, धन, प्रसन्न घरेलू जीवन, संतान से सुख, निवेश से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान सफल होगी, उनकी लोकप्रियता बढ़ेगी और शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत हैं तो आकांक्षाओं की पूर्ति होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाता स्पर्धा से मुक्त रहेंगे जबकि व्यापारी खूब लाभ कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्र और कान की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए महिलाओं के कल्याण के लिए समर्पित संस्थाओं में दान दें।

**अंतर्दशा :- मंगल - सूर्य
(07/11/2025 - 15/03/2026)**

आपकी मंगल की महादशा 14/10/2019 को प्रारंभ हो रही है। मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 07/11/2025 को प्रारंभ होकर 15/03/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपकी संतान धनी होगी और आपके लिए सुखकारक होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और आप सब सुख-सुविधाओं से युक्त रहेंगे। दर्शनशास्त्र का अध्ययन कर सकते हैं। उच्चपद, उचाधिकारियों से सहयोग, कार्यों में सफलता, घरेलू सुख के योग हैं। विशिष्ट व्यक्तियों से मित्रता होगी। सफलता आसानी से मिल जाएगी।

आपके जीवनसाथी को उच्चपद प्राप्त होगा। आपके पिता के सौभाग्य में वृद्धि होगी और अध्यात्म में रुचि रहेगी। माता को धनलाभ होगा, मगर खर्च भी बढ़ेंगे। भाई-बहनों को सुख मिलेगा, उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, साहित्य आदि से धन प्राप्त हो सकता है।

महादशा :- राहु
(14/10/2026 - 14/10/2044)

राहु की अन्तर्दशा 14/10/2026 को आरम्भ और 14/10/2044 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु-दशम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि-चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, हर प्रकार का लाभ तथा महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। राहु की इस दशा में आपकी प्रगति, जीविका में उन्नति होगी, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा तीर्थस्थलों की यात्रा होगी।



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में शक्ति होगी और आप शक्तिशाली तथा सक्रिय होंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण ज्वर, विषाणुजन्य संक्रामक रोग, रक्त संचार की समस्याएं, वातजन्य रोग, निचली भुजाओं की समस्या, चर्मरोग आदि हो सकते हैं। कुछ सावधानी बरत कर इनमें से अधिकांश से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। व्यापार-व्यवसाय में अच्छी कमाई होगी। सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। पिता से कुछ लाभ मिलेगा। आपका बैंक बैलेंस सन्तोषजनक रहेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, उड्डयन, वैमानिकी, कला, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, कम्प्यूटर, खाद्यान्न से संबंधित सेवा आदि का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, दवा, चमड़ा, एण्टीबायोटिक दवा, प्लास्टिक, रबड़ तथा भोजन से संबंधित व्यापार लाभदायक होगा। सेवार्त लोगों को लाभ, पदोन्नति, सहकर्मियों तथा वरिष्ठ अधिकारियों से सद्व्यवहार और कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से जुड़े लोगों की अच्छी आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपकी जीवन वृत्ति में उन्नति होगी। आपको यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी और आप मानवीयता के कार्य करेंगे।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको सुख आराम मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में आपको अचल सम्पत्ति, जमीन-जायदाद और वाहन का सुख मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा में छोटी तथा दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप सभी परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में अच्छा करेंगे। विज्ञान, कला, कम्प्यूटर विज्ञान, वाणिज्य-व्यापार, भोजन, प्रौद्योगिकी आदि में आपकी रुचि हो सकती है। आपकी इच्छा शक्ति मजबूत है और आप स्वभाव से स्वतंत्र हैं तथा मौलिकता और मानसिकता से सम्बद्ध सभी विषयों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे आनन्द मिलेगा। आपके जीवनसाथी को अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, जीविकोपार्जन में प्रगति, सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपकी माता की यात्रा तथा साझेदार से लाभ मिलेगा, किन्तु, उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना होगा। आपके पिता को लाभ, बचत तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक लाभ तथा परिवर्तन होगा। आपके बड़े भाई-बहनों की यात्रा, व्यय तथा मामूली स्वास्थ्य-समस्याएं हो सकती हैं।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपके जीविकोपार्जन में उन्नति तथा यात्रा होगी और आपको सुख मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा के कारण यात्रा, व्यय और धार्मिक कार्यों की ओर झुकाव होगा। शनि की अन्तर्दशा में आपको यश ख्याति, कार्यों में

सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। बुध की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति, प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय और यात्रा होगी जबकि केतु की अन्तर्दशा कुछ समस्या उत्पन्न कर सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको यश, ख्याति, सफलता, सुख तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। सूर्य के कारण कुछ परिवर्तन हो सकता है जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ होगा और शादी तथा यात्रा होगी। मंगल की अन्तर्दशा में सम्पत्ति, हर प्रकार का लाभ तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।



**अंतर्दशा :- राहु - राहु
(14/10/2026 - 26/06/2029)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/10/2026 को प्रारंभ होकर 14/10/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 14/10/2026 को प्रारंभ होकर 26/06/2029 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जाँघों का परिचायक है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। दशम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे, साहस में वृद्धि होगी, लेखक, चित्रकार आदि हो सकते हैं। साहस की अधिकता के कारण पापपथ पर चल सकते हैं। इस संबंध में सावधान रहना आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में अपने इष्टदेव की उपासना के बाद बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में गंगाजल और कच्चे दूध से धोकर धारण करें।

**अंतर्दशा :- राहु - गुरु
(26/06/2029 - 20/11/2031)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/10/2026 को प्रारंभ होकर 14/10/2044 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 26/06/2029 को प्रारंभ होकर 20/11/2031 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 8, 10, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी धर्म में रुचि होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। आप संतुष्ट और प्रसन्नचित्त रहेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आप विद्वान और दार्शनिक प्रवृत्ति के होंगे ; आलोचकों के साथ कठोरता से पेश आएंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार के दिन प्रातःकाल पूजा-उपासना के बाद कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर तर्जनी में धारण करें।